Answers to RHA /Set-1

खंड–'क' (अपठित बोध)

1. (*i*) (घ) कथन 1, 2, 3 और 4 सही हैं।

(*ii*) (ख) पृथ्वी के औसत तापमान में वृद्धि होती है।

(*iii*) (ग) कथन सही है और कारण कथन की सही व्याख्या है।

(*iv*) पर्यावरण संकट के लिए प्रदूषण, वनों की कटाई और बढ़ती हुई आबादी मुख्य रूप से जिम्मेदार हैं। वनों की कटाई ने पर्यावरण संकट को गंभीर बना दिया है इससे वातावरण में कार्बन-डाइऑक्साइड और ऑक्सीजन का संतुलन बिगड़ रहा है और जैव विविधता में कमी आ रही है। इस प्रकार पर्यावरण संकट के लिए मानव जिम्मेदार है।

(*v*) पर्यावरण संकट के समाधान के लिए ऊर्जा का संरक्षण किया जाना चाहिए। प्लास्टिक का उपयोग कम किया जाना चाहिए, प्राकृतिक संसाधनों का बुद्धिमानी से उपयोग किया जाना चाहिए और अधिक से अधिक वृक्षारोपण किया जाना चाहिए। इसके लिए लोगों को जागरूक किया जाना चाहिए।

2. (*i*) (क) कर्मशील बनने का

(*ii*) (घ) उपर्युक्त सभी

(*iii*) (ख) कथन और कारण दोनों ही गलत हैं।

(*iv*) मानव होने के नाते हमें अपने गौरव का हमेशा ध्यान होना चाहिए। हमें ऐसा काम करना चाहिए कि मृत्यु के बाद भी हमारा यशोगान होता रहे। अच्छे कर्म के कारण हमें संसार में जाना जाए। चाहे सब कुछ मिट जाए लेकिन हमारा आत्मसम्मान नहीं मिटना चाहिए।

(*v*) यह काव्यांश मनुष्य को कर्मशील बनने की प्रेरणा देती है। अपने गौरव व स्वाभिमान की रक्षा करते हुए मनुष्य को सदा अच्छे कर्म करना चाहिए। उसे समय का सदुपयोग करके सफलता प्राप्त करना चाहिए जिससे पूरी दुनिया में नाम और यश हो। इस प्रकार इस कविता से मनुष्य होने का सही अर्थ मिलता है।

खंड–'ख' (व्यावहारिक व्याकरण)

3. (*i*) क्रिया विशेषण उपवाक्य

(*ii*) सरल वाक्य

(*iii*) जीप जब कस्बा छोड़कर आगे बढ़ गई तब भी हालदार साहब मूर्ति के बारे में सोचते रहे।

(*iv*) घर आते ही उनके साथ हम भी चौंके पर खाने बैठते थे।

(*v*) एक दिन मैं वहीं सड़क पर घूम रहा था और एक जले हुए पत्थर पर मैंने एक लंबी उजली छाया देखी।

4. (*i*) बिस्मिल्ला खाँ के द्वारा गीतावाली और सुलोचना को ज्यादा याद किया जाता है।

(*ii*) नेताजी ने देश के लिए अपना सब कुछ त्याग दिया।

(*iii*) कर्मवाच्य

(*iv*) उससे अब उठा-बैठा जाता है।

(*v*) कर्तृवाच्य

5. (*i*) जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिग, वाक्य का कर्म

(*ii*) गुणवाचक विशेषण, एकवचन, स्त्रीलिंग, नदी विशेष्य का विशेषण

(*iii*) रीतिवाचक क्रिया विशेषण, चढ़ना, क्रिया की विशेषता बताने का कार्य।

(*iv*) पुरुषवाचक सर्वनाम, अन्य पुरुष, वाक्य का कर्ता

(*v*) अव्यय, विस्मयादिबोधक, आश्चर्यसूचक

6. (*i*) उत्प्रेक्षा अलंकार

(*ii*) मानवीकरण अलंकार

(*iii*) अतिशयोक्ति अलंकार

(*iv*) उपमा अलंकार

(*v*) रूपक अलंकार

खंड–'ग' (पाठ्यपुस्तक एवं पूरक पाठ्यपुस्तक)

7. (*i*) (क) कथन 1 और 2 सही हैं।

(*ii*) (ग) केवल कथन 4 सही है।

(*iii*) (ग) कथन सही है और कारण कथन की सही व्याख्या है।

(*iv*) (घ) आत्मा और परमात्मा का

(*v*) (ग) वे मृत्यु को आनंद का विषय मानते थे।

8. (क) उन्होंने ऐसा इसलिए किया होगा, क्योंकि नवाब साहब अपने को श्रेष्ठ समझते थे। किसी सफ़ेदपोश नागरिक के सामने खीरा खाने में उन्हें शर्म महसूस हो रही होगी। नवाब दिखावा तो यही कर रहे थे कि खीरा एक साधारण खाद्य-पदार्थ है और उसे खिड़की से बाहर फेंककर अपनी रईसी का झूठा प्रदर्शन कर रहे थे। इससे उनके अहंकारी स्वभाव तथा प्रदर्शन की भावना का पता चलता है।

(ख) मन्नू भंडारी के पिता महत्वाकांक्षी व्यक्ति थे। वे धुन के पक्के थे। इसी महत्वाकांक्षा के कारण उन्होंने धनाभाव में रहते हुए भी विषयवार शब्दकोश को पूरा किया। वे यश और प्रतिष्ठा के प्रति सजग थे। वे बच्चों की शिक्षा के प्रति सजग थे इसलिए वे आठ-दस विद्यार्थियों को अपने घर रखकर पढ़ाया करते थे, जिनमें से कुछ ऊँचे ओहदे पर प्रतिष्ठित हुए थे। वे कोमल व संवेदनशील थे इसलिए समाज-सुधार तथा राजनीति से जुड़े थे। ये उनकी सभी विशेषताएँ मुझे अच्छी लगीं।

(ग) मुहर्रम से बिस्मिल्ला खाँ का गहरा संबंध था। वे मुहर्रम के ग़मज़दा माहौल में शोक मनाते थे। बिस्मिल्ला खाँ इन दिनों दिल से न तो शहनाई बजाते और न किसी कार्यक्रम में शिरकत करते थे। वे दाल मंडी से आठ किलोमीटर दूरी तक नौहा बजाते हुए पैदल जाते थे। हज़रत इमाम हुसैन और उनके परिवार के लोगों की शहादत में उनकी आँखें नम रहती थीं।

(घ) मेरे विचार से मन के शुद्ध भाव संस्कृति हैं। इनमें मानवीय मूल्यों, जैसे– परोपकार, सहिष्णुता, दया, करुणा तथा धैर्य का समावेश होता है। हमारे रहन-सहन, खान-पान एवं वेश-भूषा का परिचय सभ्यता के द्वारा मिलता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि संस्कृति आंतरिक वस्तु है, जबकि सभ्यता बाहरी।

9. (*i*) (ख) उद्धव के लिए

(*ii*) (क) गोपियाँ, उद्धव

(*iii*) (ग) कथन सही है और कारण कथन की सही व्याख्या है।

(*iv*) (ग) वह प्रजा को नहीं सताए।

(*v*) (ग) केवल कथन 3 सही है।

10. (क) कवि 'आत्मकथ्य' लिखने को ही विडंबना मानते हैं क्योंकि ईमानदारी से आत्मकथ्य लिखने का अर्थ है कि दूसरे लोगों के छल- कपटपूर्ण व्यवहार का पर्दाफ़ाश करना। सच्चाई एवं ईमानदारी से अपने जीवन का सार लिखने से उन सभी व्यक्तियों की कलई खुल जाएगी, जिन्होंने छल-कपट एवं विश्वासघात से कवि के जीवन का गागर रिक्त कर दिया। इससे कवि की अपने कर्तव्य के प्रति ईमानदारी एवं निष्ठा संबंधी गुणों का पता चलता है।

(ख) 'अट नहीं रही है' कविता में फागुन मास की सुंदरता का मनमोहक वर्णन किया गया है। इस मास में प्रकृति में एक नया निखार आ जाता है। इसका सौंदर्य रंग-बिरंगे फूलों, पत्तों व हवाओं में दृष्टिगोचर होता है। फागुन की सुंदरता और उल्लास चारों तरफ़ दिखाई पड़ता है। कवि की आँखें फागुन की सुंदरता से अभिभूत हैं इसलिए वह इस पर से नज़रें हटा नहीं पाता।

(ग) बच्चे की मुसकान बहुत भोली, सरल व निश्छल होती है। यह हमारे तन-मन में उमंग व उत्साह का संचार करती है। बच्चों की मुसकान सहज व स्वाभाविक क्रिया है, जो कठोर-से-कठोर हृदय को भी पिघला देती है।

(घ) संगतकार मुख्य गायक के निराश, निरुत्साहित तथा थक जाने पर उसका साथ देता है। वह झिझकते से स्वरों में मुख्य गायक का साथ देता है। मुख्य गायक के स्वर से अपने स्वर को नीचा रखकर वह उसकी महत्ता को प्रतिष्ठित करता है तथा मुख्य गायक का प्रभाव बढ़ाता रहता है।

11. (क) लोंग स्टॉक में घूमते हुए चक्र के विषय में ऐसी धारणा है कि यह धर्मचक्र है। इसे घुमाने से सभी पाप धुल जाते हैं। यह जानकर जब लेखिका ने घूमते हुए चक्र को देखा तो उन्हें लगा कि धर्म के संबंध में इस देश के लोगों की आस्थाएँ, विश्वास, अंधविश्वास, पाप-पुण्य की अवधारणाएँ और कल्पनाएँ एक हैं। पहाड़ी लोग प्रेयर व्हील में आस्था रखते हैं, तो मैदानी लोग गंगास्नान, तीर्थाटन, जप, व्रत आदि में विश्वास रखते हैं। अतः इस संबंध में पूरे भारत की आत्मा एक-सी ही प्रतीत होती है।

(ख) लेखक को जापान जाने का अवसर मिला। वहाँ उन्होंने वह अस्पताल भी देखा जहाँ रेडियम-पदार्थ से आहत लोग वर्षों से कष्ट में थे। पर प्रत्यक्ष अनुभूति के अभाव में उन्होंने कुछ नहीं लिखा। एक दिन अचानक सड़क पर घूमते हुए उन्होंने देखा कि एक जले हुए पत्थर पर एक लंबी उजली छाया है। उन्होंने कल्पना की कि विस्फोट के दौरान कोई खड़ा रहा होगा और विस्फोटक किरणों ने उसे भाप बनाकर उड़ा दिया होगा। इतिहास को यह दृश्य उनके अंतर्मन में कौंध गया और अचानक एक दिन उन्होंने हिरोशिमा पर कविता लिख डाली।
इस आधार पर हम कह सकते हैं कि लेखक को उनके लेखन में प्रत्यक्ष अनुभव की अपेक्षा आत्मानुभूति अधिक मदद की है।

(ग) इन पंक्तियों के माध्यम से लेखक ने समाज में बुजुर्गों की निरंतर हो रही उपेक्षा की ओर संकेत किया है। यह सत्य है कि आधुनिक समाज में बुजुर्गों के सम्मान व देखरेख में कमी आई है। परिवार में सदस्यों की संख्या कम होने और समयाभाव के कारण लोग अपने घर के बुजुर्गों को पर्याप्त समय नहीं दे पाते जिस कारण वे अपने आपको उपेक्षित महसूस करते हैं। लोग अपने सीमित संसाधनों को व्यय करते समय बच्चों की शिक्षा आदि को प्राथमिकता देते हैं जिस वजह से बुजुर्गों को अभावपूर्ण जीवन जीना पड़ता है।

खंड–'घ' (रचनात्मक लेखन)

12. (क) **बढ़ते शहर घटते गाँव**

शहरों के बढ़ने और गाँवों के घटने के कारण भारत का ग्रामीण परिवेश संकट में आ गया है और इससे भी बड़ा संकट है-शहरी जीवन में बढ़ती हुई चुनौतियों का। रोज़गार के अवसर कम होने के कारण ग्रामीण लोग नए सपने लेकर शहरों की ओर कदम बढ़ाते हैं। गाँव से यह पलायन शहरों की भीड़ को बढ़ाता है। एक रिपोर्ट के अनुसार 2050 तक भारत की आधी आबादी शहरों में रहने लगेगी और गाँवों का अस्तित्व संकट में आ जाएगा। भारत एक कृषि प्रधान देश है और यदि ऐसा हुआ तो यह कृषि प्रधान देश जो अनाज का कटोरा भी कहा जाता है संकट में पड़ जाएगा। जनसंख्या के बढ़ने के कारण स्वास्थ्य समस्याएँ, पर्यावरण से जूझने वाले संकटों और शहरों में बढ़ती हुई झोंपड़ पट्टियों के कारण दैनिक सुविधाओं के अभाव में ग्रामीण बहुत-सी बीमारियों का भी शिकार हो जाते हैं। अतः भारत की अर्थव्यवस्था को एक नया रूप देना आवश्यक है। जिसमें गाँवों का अस्तित्व बना रहे और शहरों में असंतुलन न हो। इसके लिए ऑर्गनिक फार्मिंग, तथा अन्य कृषि योजनाओं और तरीकों से ग्रामीणों को शिक्षित भी किया जा रहा है

(ख) **वर्तमान युग : डिजिटल युग**

वर्तमान समय डिजिटल का युग है। वर्तमान समय में इंटरनेट संचार क्रांति का सशक्त माध्यम बन चुका है। भारत में केवल शहर ही नहीं गाँवों के कोने-कोने तक यह माध्यम अपनी पहुँच बढ़ा चुका है। इंटरनेट ने समस्त मानव जाति में एक अनोखा परिवर्तन ला दिया है। इंटरनेट का सबसे बड़ा लाभ शिक्षा, उद्योग जगत-चिकित्सा तथा

बैंकिंग सेक्टर के साथ-साथ और भी कई अन्य रूपों में सामने आया है। आज हम खुद से हजार मील दूर बैठे लोगों से वीडियो कॉल के माध्यम से क्षण भर में बात कर पाते हैं। यह सब इंटरनेट की देन है। आज हम जिस ऑनलाइन शिक्षा का लाभ उठा पा रहे हैं वह भी इंटरनेट की ही देन है। ऑनलाइन गेमिंग और ऑनलाइन शॉपिंग जैसी अन्य कई एप्पस इंटरनेट की बेहतरीन सर्विस के कारण ही लोगों में लोकप्रिय और प्रचलित हैं। आज इंटरनेट की सुविधा ने हमें कई तरह से वैश्विक गतिवधियों से जोड़ा है जिसके दूरगामी प्रभाव उज्ज्वल प्रतीत होते हैं।

(ग) **संघे शक्ति : कलौ युगे**

'संघे शक्तिः कलौ युगे' उक्ति का अर्थ है— कलियुग में संगठन में शक्ति है, जिससे बड़े से बड़ा पहाड़ भी किसी का रास्ता नहीं रोक सकता। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह सभी के साथ मिल-जुलकर रहना चाहता था। इस प्रकार की भावना ही घर-परिवार की नींव है। जब अनेक परिवार आपस में मिल-जुलकर प्रेमभाव से रहते हैं तब समाज का निर्माण होता है। समाज में सहयोग की भावना का होना आवश्यक है। समाज में रहते हुए हमें जीवन के हर एक मोड़ पर किसी न किसी के सहयोग की आवश्यकता ज़रूर पड़ती है। जिस कठिन कार्य को व्यक्ति अकेला करने में समर्थ नहीं हो पाता वह एकजुट होकर आसानी से किया जा सकता है। वास्तव में अकेले ज़िंदगी जीना कठिन है किंतु यदि संयुक्त रूप से जिया जाए तो जीवन का प्रत्येक कार्य आसान हो जाता है। आज कहीं न कहीं देश में संगठन शक्ति का अभाव दिखाई देता है। धर्म, जाति, भाषा, संप्रदाय आदि के नाम पर देश की एकता विघटित हो रही है। अतः समाज का हिस्सा होने के नाते हम सभी को यह समझना आवश्यक है कि संगठित रूप में होने पर हम किसी भी कठिन से कठिन परिस्थिति का सामना आसानी से कर सकते हैं, न कि एकल रूप में।

13. (क) सेवा में

प्रधानाचार्य महोदय

अ०ब०स० विद्यालय

नई दिल्ली

दिनांक : 10.अप्रैल, 20xx

विषय—विद्यालय में कंप्यूटरों की संख्या बढ़ाने के संबंध में।

महोदय

सविनय निवेदय है कि मैं आपके विद्यालय की कक्षा दसवीं 'अ' की छात्रा हूँ। मैं आपका ध्यान अपने स्कूल में हो रही कंप्यूटरों की कमी की ओर दिलाना चाहती हूँ।

हमारे विद्यालय में कंप्यूटरों की संख्या विद्यार्थियों की संख्या की अपेक्षा बहुत कम है जिसके कारण हम सभी की कंप्यूटर की शिक्षा की समुचित व्यवस्था नहीं हो पा रही है। इससे हम सभी विद्यार्थियों को कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है। आप इस तथ्य से भलीभाँति परिचित होंगे कि आज के युग में कंप्यूटर शिक्षा कितनी अधिक उपयोगी है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में कंप्यूटर का प्रयोग किया जाता है तथा नौकरियों में भी उसी व्यक्ति को अधिक प्राथमिकता दी जाती है जिसको कंप्यूटर का ज्ञान होता है।

अतः आपसे विनम्र निवेदन है कि आप इस दिशा में गंभीरतापूर्वक विचार करें तथा शीघ्रातिशीघ्र कंप्यूटर सिस्टम की उचित व्यवस्था कराने की कृपा करें। मैं और विद्यालय के सभी छात्र-छात्राएँ इस कार्य के लिए आपके आभारी रहेंगे।

सधन्यवाद।

भवदीया

वैशाली

अथवा

(ख) परीक्षा भवन

अ०ब०स०

दिनांक : 20 अगस्त, 20xx

सप्रेम नमस्कार

मैं यहाँ पर कुशलता से हूँ। आशा है तुम भी सकुशल होंगे। अनुज ने मुझे फोन पर बताया कि तुम्हारा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर होने वाली बैडमिंटन चैंपियनशिप प्रतियोगिता में चयन नहीं हो पाया। मैं समझ सकता हूँ कि इस समय तुम्हारी मनोस्थिति कैसी होगी और तुम पर क्या बीत रही होगी। पर मित्र निराश मत होना क्योंकि इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं है। तुम्हारी तबीयत इतनी खराब हो गई थी कि तुम ठीक से चल-फिर भी नहीं पा रहे थे। ऐसे में तुम कर भी क्या सकते थे। डॉक्टरों ने तुम्हें अभ्यास करने से भी मना कर दिया था। केवल आराम करने की सलाह दी थी। बीमारी से उठने के बाद कमजोरी अधिक होने से तुम बैडमिंटन का अभ्यास नहीं कर पाए। जो थोड़ा बहुत अभ्यास किया वह इस बड़ी प्रतियोगिता के लिए पर्याप्त नहीं था।

तुम अपनी हिम्मत और हौसला बनाए रखो। मुझे पूरा विश्वास है कि तुम फिर से मेहनत करके और कठिन अभ्यास करके आगामी बैडमिंटन चैंपियनशिप में अवश्य सफलता प्राप्त करोगे।

अब नई आशा और विश्वास के साथ फिर से अपनी तैयारी में जुट जाओ।

तुम्हारा मित्र

वैभव

14. (क) **प्रशिक्षित स्नातक कंप्यूटर शिक्षक पद के लिए स्ववृत्त**

नाम – शशांक कुमार

पिता का नाम – अरुण कुमार गुप्ता

माता का नाम – आशा गुप्ता

जन्म तिथि – 12 अप्रैल, 19xx

वर्तमान पता – अ०ब०स० नगर, दिल्ली

स्थायी पता – उपर्युक्त

मोबाइल नं० – 9738xxxxxx

ई-मेल – gupta@gmail.com

शैक्षणिक योग्यताएँ

क्र०सं०	परीक्षा/डिग्री/ डिप्लोमा	वर्ष	विद्यालय/बोर्ड/ महाविद्यालय/ विश्वविद्यालय	विषय	श्रेणी	प्रतिशत
1.	दसवीं कक्षा	2012	अ.ब.स. विद्यालय, सी.बी.एस.ई., दिल्ली	अंग्रेज़ी, हिंदी, गणित, सामाजिक विज्ञान, विज्ञान,	प्रथम	85%
2.	बारहवीं कक्षा	2014	अ.ब.स. विद्यालय, सी.बी.एस.ई., दिल्ली	अंग्रेज़ी, गणित, अकाउंट्स, अर्थशास्त्र, बी०एस०टी०	प्रथम	87%

3.	बी०कॉम०	2017	दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली	अर्थशास्त्र, बैंकिंग, गणित, कंप्यूटर सांइस	प्रथम	89%
4.	एम०सी०ए०	2019	दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली	कंप्यूटर	प्रथम	75%
5.	बी०एड०	2021	दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली	अर्थशास्त्र, अंग्रेजी, शिक्षा मनोविज्ञान	प्रथम	68%

अनुभव

• अ०ब०स० पब्लिक स्कूल, रोहिणी, दिल्ली में कंप्यूटर शिक्षक के पद पर एक वर्ष से कार्यरत।

उपलब्धियाँ

• स्नातक तीनों वर्षों में प्रथम श्रेणी के लिए पुरस्कृत।

• विद्यालय तथा महाविद्यालय स्तर पर वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम स्थान।

मैं प्रमाणित करता हूँ कि आवेदित पद के लिए निर्धारित विशेषताएँ मुझमें हैं। मैं पूरी निष्ठा के साथ काम करूँगा।

धन्यवाद सहित।

शशांक

20 मार्च, 20xx

अथवा

(ख) प्रेषक : abc@gmail.com

प्राप्तकर्ता : xyz@gmail.com

प्रतिलिपि (सी०सी०) : pqr@gmail.com

गोपनीय प्रतिलिपि (बी०सी०सी०) : abc@gmail.com

विषय : टी०जी०टी० प्रतियोगिता परीक्षा का प्रवेश-पत्र डाउनलोड न हो पाने के संदर्भ में।

महोदय,

मैं आपके संज्ञान में लाना चाहता हूँ कि मैंने उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड के द्वारा आयोजित की जाने वाली टी०जी०टी० प्रतियोगिता परीक्षा के लिए आवेदन किया था। आयोग द्वारा परीक्षा तिथि घोषित की जा चुकी है। यह निर्देश हुआ था कि परीक्षा से एक सप्ताह पूर्व तक परीक्षा का प्रवेश पत्र आयोग की साइट पर जाकर डाउनलोड करें। मैंने दिए गए निर्देशानुसार अनेक बार परीक्षा प्रवेश-पत्र डाउनलोड करने की कोशिश की परंतु मेरा परीक्षा प्रवेश पत्र डाउनलोड नहीं हो पा रहा है। कृपया आप उचित मार्गदर्शन करें और मेरी समस्या का उचित समाधान करें।

धन्यवाद सहित।

भवदीय

सुदर्शन

15. (क)

बाढ़ग्रस्त लोगों की सहायतार्थ सामग्री एकत्रित करने हेतु शिविर का आयोजन

विवरण इस प्रकार है–

स्थान– अ०ब०स० विद्यालय परिसर,
य०र०ल० नगर, दिल्ली

दिनांक – 20 जून, 20xx

समय– प्रातः 8:30 बजे से शाम 4:00 बजे तक

वस्त्र, भोजन सामग्री एवं अन्य किसी भी प्रकार से अपना योगदान दे सकते हैं।

संपर्क करें– 92xxxxxxxx

अथवा

(ख)

संदेश

दिनांक : 10 नवंबर, 20xx

पूर्वाह्न : 8:00 बजे

प्रिय मित्र,

आपको तथा आपके परिवार को दीपावली के पावन पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएँ। यह पर्व आप सबके लिए ढेर सारी खुशियाँ और सुख-समद्धि लेकर आए। आप सभी हमेशा स्वस्थ रहें और खुश रहें। ईश्वर से यही मेरी कामना है।

तुम्हारा मित्र

क०ख०ग